

→ भारत का भूगर्भित इतिहास अत्यंत प्राचीन होने के साथ अपने आप में विशिष्ट भी है क्योंकि यहाँ **Pre Cambrian युग** में निर्मित प्राचीनतम जीवाश्म रहित **संरचना आग्नेय चट्टान** से निर्मित संरचना से लेकर **Platocine हिमयुग** के बाद **नवीनतम जीवाश्मयुक्त व जलोद्भूत संरचना** का भी विकास हुआ है। प्रायद्वीपीय भारत में **सर्वप्रथम ही Precambrian युग** के प्रारंभ में गर्भ शक्ति पदार्थ अर्थात् **Magma** के **जीवलीकरण** के द्वारा **आग्नेय चट्टान** के रूप में **आर्दिभन संरचना** का विकास हुआ। **ग्रेनाइट** और इसके **कायांतरण** से निर्मित **गीस चट्टान** से संबंधित यह एक ऐसी जीवाश्म रहित प्राचीनतम संरचना है जो **स्वनिज संसाधनों** के भंडार के दृष्टि से महत्वपूर्ण है लेकिन प्रायद्वीपीय भारत के अधिकांश क्षेत्र में **अंदर की परतों** में चले जाने के साथ **नदील संरचना** होने के कारण **स्वनिज संसाधनों** का आर्दिभन दृष्टि से **दोहन** एक डबिन कार्य है।

→ **दक्षिणी पर्वतीय क्षेत्र** **हुंदेलखंड** के **पठार** और **W. R.** के **पठारी क्षेत्र** में यह संरचना स्तर पर नजर आती है। आर्दिभन संरचना में भौतिक और रासायनिक परिवर्तन के कारण प्राप्त अवसादों के निक्षेपण से **प्यारवाड संरचना** का विकास हुआ जो **अवसादी चट्टान** से निर्मित प्राचीनतम जीवाश्म रहित संरचना है। इस संरचना का सर्वोच्च विकास **इरीरु** के **प्यारवाड क्षेत्र** में हुआ है। इसके अतिरिक्त **आरावली पर्वतीय क्षेत्र** और **छोटानागपुर** के **पठारी क्षेत्र** में भी इस संरचना का सर्वोच्च विकास हुआ है। **बाबापुर पर्वत, आरावली, पामनाथ हिल** और **शिलांग रेंज** का निर्माण **प्यारवाड संरचना** से हुआ है। यह संरचना **भौतिक और रासायनिक** स्वनिज संसाधन के भंडार के दृष्टि से **महत्वपूर्ण** है। **अपर की परतों** में मिलने के साथ आर्दिभन की अपेक्षा

इस जटिल संरचना होने के कारण चारवाह संरचना का आर्चिड इति से दोहन अपेक्षाकृत आसान है।

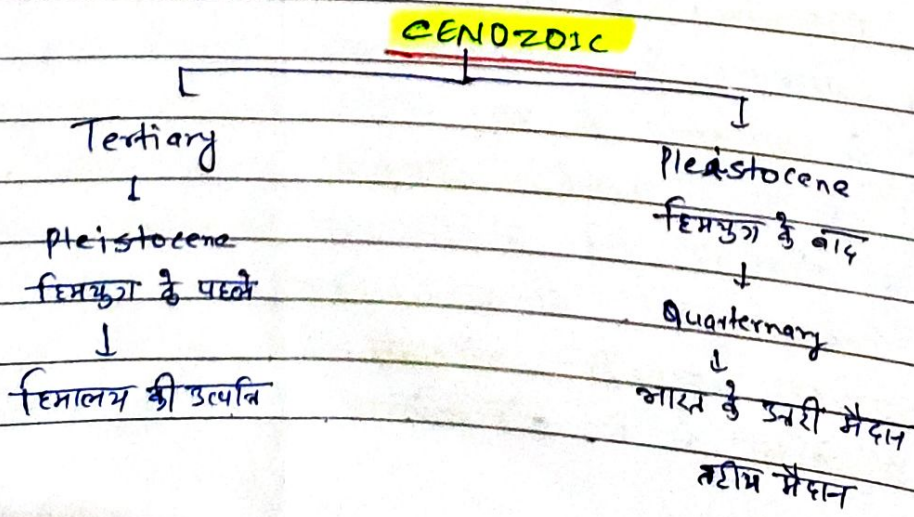
→ चारवाह संरचना के बाद अपसादों के निर्माण से कुडप्पा संरचना का विकास हुआ जो नूना-पत्थर के भंडार के इति से एक महत्वपूर्ण संरचना है लेकिन यह भी जीवाश्म रहित अवसादी चट्टान से निर्मित संरचना है। इसका सर्वाधिक विकास आंध्रा के कुडप्पा बेसिन में हुआ है। इसके अतिरिक्त आरावली पर्वतीय क्षेत्र, दोंग नागपुर के पठार, वण्डकारणम के पठार और कर्नाटक के पठारी क्षेत्र में भी इस संरचना का विकास हुआ है। Precambrian युग के अंत में अवसादी चट्टान से निर्मित विरंचन संरचना का विकास हुआ है जो लाल बालू का पत्थर और नूना पत्थर के भंडार के इति से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अवसादी चट्टान से निर्मित ये बल संरचना में जीवाश्म के प्रमाण भी मिलते हैं।

→ Paleozoic कल्प में Cambrian से लेकर Devonian तक का समय प्रायद्वीपीय भारत में संरचनात्मक विकास के इति से महत्वपूर्ण नहीं है जबकि Carboniferous - Permian युग में गोंडवाना संरचना का विकास हुआ। यह संरचना Guntur कोमला के भंडार के इति से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्रायद्वीपीय भारत के पूर्वी पठारी क्षेत्र में अखंडतल के द्वारा निर्मित बेसिन में अवसादों के साथ वनस्पति और जीवों के अनेक अवशेष का विक्षेपण होने के कारण ही गोंडवाना संरचना का विकास हुआ। इस संरचना का वर्तमान में दामोदर, महानदी, गोदावरी, स्तोन और नर्मदा नदी बेसिन से है। इनमें दामोदर

नी बेसिन कोचला है भेग के इविए से सर्वाचिकु
प्रदरवुर्ण है।

→ Mesozoic रूप है Triassic, Jurassic
युग में महादेव और पान्नी पर्वतीय क्षेत्र में
यूना पत्थर चट्टान से निर्मित संरचना का विकास
हुआ जबकि Cretaceous युग के समय आंत
द्वारा उठार की ज्वालामुखी प्रक्रिया के द्वारा बसाल्ट
चट्टान से निर्मित संरचना का विकास हुआ।
इस संरचना का सर्वाचिकु विकास महाराष्ट्र के
दक्कन ट्रैप क्षेत्र में हुआ। इसके अतिरिक्त गुजरात
के दाभीयावाड त्राशदीप, M.P के मालवा पठार, दोय-
नवापुर के राजमहल पर्वतीय क्षेत्र, ओच्छा के
तेलंगणा पठार, तमिलनाडू के कोमेटूर मधुरई पठार,
कर्नाटक के बंगलौर मैसूर पठार में बसाल्ट चट्टान
से निर्मित संरचना का विकास हुआ।

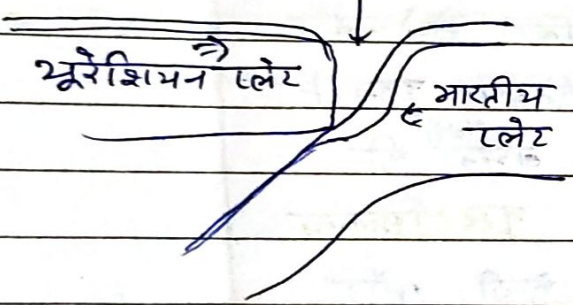
अवधिपरि → Map
उत्पत्ति एवं संरचना → खोजित इतिहास
उच्चावच → map
अपवाह क्षेत्र → map
भौतिक
आर्कित



Cenozoic → Tertiary Period → Paleocene - Eocene → टैशियस सागर का संकुचन हुआ

Pangong Lake

टैशियस सागर



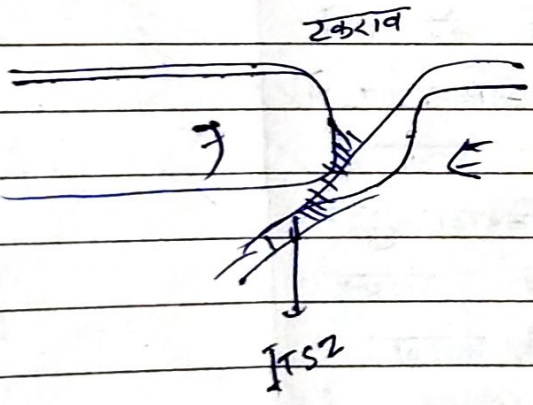
→ Oligocene → वृद्ध हिमालय

अंतरा → MCT

MIOCENE

→ प्रचल/लघु हिमालय

अंतरा → MBF



PLIOCENE

→ शिवालिक

अंतरा → HFF

